नमूना प्रश्न

हिन्दी 'अ' (कोड संख्या - 002)

कक्षा - दसवीं एस ए - 2 (2014-15)

	खंड - 'क'
	अपठित गद्यांश - 1
प्रश्न 1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए:** जहाँ भी दो नदियाँ मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में तीर्थ कहने का रिवाज़ है। कई पहाड़ों, जंगलों और खेतों पर गिरी बारिश के पानी के संगम से नदियाँ बनती हैं। एक दूसरे से मिलकर ये नदियाँ बड़ी हो जाती हं। सबसे बड़ी नदी वह होती है जिसका दूसरी नदियों से सबसे ज्यादा संयोग होता है। अगर सागर से उलटी गंगा बहाएँ तो गंगा का स्रोत गंगोत्री या उद्‌गम गोमुख भर नहीं होगा। यमुनोत्री और तिब्बत में ब्रह्मपुत्र का स्रोत भी होगा, दिल्ली, बनारस और पटना जैसे शहरों के सीवर से निकलने वाला पानी भी होगा। बनारस या पटना में गंगा विशाल नदी है, लेकिन वहाँ उसका पानी मात्र शिवजी की जटा से निकल कर नहीं आता। भारतीय परिवेश में असली संगम वे स्थान हैं, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं। नदियाँ अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना जनपदों के मिलन का प्रतीक है। यही हाल भाषाओं का भी है। अगर हिंदी और उर्दू, संस्कृत और फारसी को बड़ी भाषाएँ माना जाए, तो यह तय है कि इनका संगम कई दूसरी भाषाओं से हुआ होगा। अगर किसी भाषा का दूसरी भाषाओं से मेल-मिलाप बंद हो जाता है तो उसका बहना रुक जाता है, ठीक उस नदी के जैसे, जिसमें दूसरी नदियों का पानी मिलना बंद हो जाता है। **VSA - अतिलघूत्तरात्मक / बहुविकल्पात्मक: 1 अंक** (i) सबसे बड़ी नदी वह होती है: (क) जो पहाड़ों से निकलती है। (ख) जिसके किनारे तीर्थ स्थान होते हैं। (ग) जिसमें जंगलों - खेतो की बारिश का संगम होता है। (घ) जिसमें दूसरी नदियाँ आकर मिलती हैं। (ii) उलटी गंगा बहाने का अर्थ है- (क) गंगा को गोमुख की ओर ले जाना (ख) परंपरा के विपरीत कार्य करना

	(ग) गंगा को सागर में न मिलने देना (घ) प्रसिद्ध चलन का विरोध करना (iii) बनारस और पटना में गंगा विशाल नदी है क्योंकि - (क) वह इन शहरों से होती हुई सागर में जा मिलती है। (ख) उसमें कई नदियाँ मिलती हैं। (ग) बनारस घाट पर उसकी पूजा होती है। (घ) उसके कई नाम हैं। (iv) लेखिका ने असली संगम किसे कहा है? (क) जहाँ नदियों का पानी मिलता हो (ख) जनपदों की मिलन सभाओं को (ग) वे स्थान जहाँ अधिक लोग एकत्र हों (घ) व सभाएँ और मंच जहाँ एकाधिक भाषाएँ एकत्र हों। (v) वही भाषा बड़ी भाषा है - (क) जो हिंदी और उर्दू से प्रभावित हो। (ख) जिसका दूसरी भाषाओं से अधिकाधिक संयोग हो। (ग) जिसका उत्स फारसी या संस्कृत से हुआ हो। (घ) जिसे बोलना अधिकतर भारतवासी पसंद करें।
	अपठित गद्यांश - 2
प्रश्न 2	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए:** आवश्यकता के अनुरूप प्रत्येक जीव को कार्य करना पड़ता है। कर्म से कोई मुक्त नहीं है। अत्यंत उच्चस्तरीय आध्यत्मिक जीव जो साधना में लीन है अथवा उसके विपरीत वैचारिक क्षमता से हीन व्यक्ति ही कर्महीन रह सकता है। शरीर ऊर्जा का केंद्र है। प्रकृति से ऊर्जा प्राप्त करने की इच्छा और अपनी ऊर्जा से परिवेश को समृद्ध करने का भाव मानव के सभी कार्य-व्यवहारों को नियंत्रित करता है। अत: आध्यत्मिक साधना में लीन और वैचारिक क्षमना से हीन व्यक्ति भी किसी न किसी स्तर पर कर्मलीन रहते ही हैं। गीता में कृष्ण कहते हैं 'यदि तुम स्वेच्छा से कर्म नहीं करोगे तो प्रकृति तुमसे बलात् कर्म कराएगी।' जीव मात्र कल्याण की भावना से पोषित कर्म पूज्य हो जाता है। इस दृष्टि से जा राजनीति के माध्यम से मानवता की सेवा करना चाहते हैं उन्हें उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यदि वे उचित भावना से कार्य करें तो वे अपने कार्यो को आध्यात्मिक स्तर तक उठा सकते हैं। यह समय की पुकार है। जो राजनीति में प्रवेश पाना चाहते हैं, वे यह कार्य आध्यत्मिक दृष्टिकोन लेकर

करें और दिन-प्रतिदिन आत्मविश्लेषण, अंतर्दृष्टि, सतर्कता और सावधानी के साथ अपने आप का परीक्षण करें, जिससे वे सन्मार्ग से भटक न जाएँ। राजेंद्रप्रसाद के अनुसार ''सेवक के लिए हमेशा जगह खाली पड़ी रहती है। उम्मीदवारों की भीड़ सेवा के लिए नहीं हुआ करती। भीड़ तो सेवा के फल के बँटवारे के लिए लगा करती है। जिसका ध्येय केवल सेवा है, सेवा का फल नहीं, उसको इस धक्का-मुक्की में जाने की और इस होड़ में पड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है।''

VSA - अतिलघूत्तरात्मक / बहुविकल्पात्मक: 1 अंक

(i) कर्म से मुक्ति संभव क्यों नहीं?

(क) क्योंकि कुछ आध्यात्मिक जीव साधना में लीन हैं।
(ख) क्योंकि शरीर शक्ति से भरपूर है।
(ग) क्योंकि कुछ जीव वैचारिक क्षमता से हीन हैं
(घ) क्योंकि प्रकृति को ऊर्जा चाहिए।

(ii) कर्म आध्यात्मिक साधना कैसे बन सकता है?

(क) शरीर की ऊर्जा के दान से
(ख) प्रकृति से ऊर्जा प्राप्त कर
(ग) गीता के उपदेशानुसार
(घ) प्रत्येक प्राणी के हित में कर्म किए जाने पर

(iii) किसे उपेक्षित नहीं किया जा सकता?

(क) जो राजनीति में प्रवेश करना चाहते हैं
(ख) जो मानव मात्र की सेवा करना चाहते हैं
(ग) जो आध्यात्मिक कार्यों के इच्छुक हैं
(घ) जो आत्मविश्लेषण करते हैं

(iv) समय की पुकार है -

(क) ज्यादा से ज्यादा लोग राजनीति में प्रवेश करें।
(ख) स्पष्ट दृष्टिकोण ले राजनीति में प्रवेश करें।
(ग) हम दिन-प्रतिदिन सतर्क और सावधान रहें।
(घ) राजनेता सतत आत्मपरीक्षण करें।

(v) सच्चे सेवक की पहचान क्या है?

(क) वह उम्मीदवारों की भीड़ में शामिल होगा।

	(ख) वह धक्का-मुक्की और मुकाबले में शामिल होगा। (ग) वह फल का बंटवारा करेगा। (घ) वह हमेशा खाली पड़ी जगह भर देगा।
	अपठित काव्यांश - 1
प्रश्न 3	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए:** भाग्यवाद आवरण पाप का और शस्त्र शोषण का जिससे रखता दबा एक जन भाग दूसरे जन का। पूछो किसी भाग्यवादी से यदि विधि-अंक प्रबल है पद पर क्यों देती न स्वयं वसुधा निज रतन उगल है? उपजाता क्यों विभव प्रकृति को सींच-सींच वह जल से? क्यों न उठा लेता निज संचित कोष भाग्य के बल से? एक मनुज संचित करता है अर्थ पाप के बल से और भोगता उसे दूसरा भाग्यवाद के छल से नर समाज का भाग्य एक है वह श्रम, वह भुज-बल है जिसके सम्मुख झुकी हुई पृथ्वी, विनीत नभ-तल है। **<u>VSA - अतिलघूत्तरात्मक / बहुविकल्पात्मक: 1 अंक</u>** (i) शोषण का प्रतीक किसे माना गया है? (क) भाग्यवाद को

	(ख) शस्त्रों को (ग) शास्त्रों को (घ) मनुष्य को (ii) दूसरे के हक को कौन भोगता है? (क) भाग्यवादी (ख) शोषक (ग) परिश्रमी (घ) कर्महीन (iii) 'विधि-अंक' का आशय है - (क) प्रकृति (ख) ब्रह्मा (ग) वसुधा-कोष (घ) भाग्यलेख (iv) मनुष्य वसुधा के रत्नों को कैसे प्राप्त कर सकता है? (क) भाग्य से (ख) भुजबल से (ग) वैभव स (घ) शोषण से (v) कवि के अनुसार मनुष्य का भाग्य क्या है? (क) संचित धन (ख) उसकी मेहनत (ग) विशाल पृथ्वी (घ) विनीत आकाश
	अपठित काव्यांश - 2
प्रश्न 4	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए:**

तापित को स्निग्ध करे
प्यासे को चैन दे।
सूखे हुए अधरों को
फिर से जो बैन दे।
ऐसा सभी पानी है।

लहरों के आने पर
काई - सा फटे नहीं
रोटी के लालच में
तोते - सा रटे नहीं
प्राणी वही प्राणी है।

लँगड़े को पाँव और
लूले को हाथ दे,
रात की सँभार में
मरने तक साथ दे,

बोले तो हमेशा सच
सच से हटे नहीं,
हरगिज डरे नहीं
सचमुच वही प्राणी है।

VSA - अतिलघूत्तरात्मक / बहुविकल्पात्मक: 1 अंक

(i) कवि के अनुसार पानी की विशेषता है -

(क) जीवन देना
(ख) प्यास, गर्मी और शुष्कता दूर करना
(ग) अधरों को चैन दे स्निग्ध करना
(घ) जल स्त्रोतों को भर देना

(ii) सच्चा प्राणी कौन है?

(क) जो जीवन की लहरों के साथ बह जाए
(ख) जो सबसे प्रेम करे, लड़े नहीं
(ग) जो जीवन का सम्मान करे

	(घ) जो जीवन के उतार-चढ़ाव में बिखरे नहीं (iii) 'लँगड़े को पाँव और लूले को हाथ दे' का तात्पर्य है - (क) सबको बराबर मानना (ख) सबसे उचित व्यवहार करना (ग) किसी का भी अहित न करना (घ) असहाय और असमर्थ लोगों की सहायता करना (iv) काव्यांश के आधार पर प्राणी छोटा कब बन जाता है? (क) जब वह सबको अपने से बड़ा माने (ख) जब प्राणी स्वार्थ भाव से कार्य करे (ग) जब वह आयु में दूसरों से छोटा हो (घ) जब दूसरे उसे छोटा मानने लगें (v) 'तोते-सा रटे नहीं' में कौन-सा अलंकार है? (क) अनुप्रास (ख) उपमा (ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा
	खंड - 'ख' **VSA - अतिलघूत्तरात्मक: 1 अंक**
प्रश्न 1	**निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए -** (i) वह अध्यापक था, जो कल यहाँ आया था। (संयुक्त वाक्य में) (ii) घायल सैनिक ने शस्त्र उठाया और वह शत्रुओं से लड़ने लगा। (मिश्रित वाक्य में) (iii) राम दशरथ के पुत्र थे और वे पिता की आज्ञा से वन को गए (सरल वाक्य में)
प्रश्न 2	**निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए -** (i) मैं पढ़ नहीं सकता। (भाववाच्य) (ii) उसने भोजन कर लिया है। (कर्मवाच्य) (iii) मुझसे सहा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य) (iv) पेड़ कट गए हैं। (भाववाच्य)
प्रश्न 3	**रेखांकित पदों का परिचय दीजिए:** रेखा नवीं कक्षा में पढती है।

प्रश्न 4	(क) काव्य पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़कर रस का निर्णय कीजिए: (i) निसदिन बरसत नैन हमारे। सदा रहत पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे। (ii) हँसि हँसि भाजै देखि दूलह दिगंबर को पाहुनी जे आँखें हिमाचल के उछाह में। (iii) रे नृप बालक काल बस, बोलत तोहि न संभार। (ख) वीर रस का स्थायी भाव क्या है?
	खंड –'ग'
प्रश्न 1	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :** यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने , काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। **<u>VSA - अतिलघूत्तरात्मक: 1 अंक</u>** (क) लेखिका ने बचपन में कौन-से खेल खेले ? **<u>SA - लघूत्तरात्मक : 2 अंक</u>** (क) 'घर की दीवारें घर तक समाप्त नहीं हा जाती थीं' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है ? (ख) लेखिका चिंतित क्यों है ?
	अथवा
	हिंदी, बांग्ला आदि भाषाएँ आजकल की प्राकृत हैं, शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री और पाली आदि भाषाएं उस ज़माने की थीं। प्राकृत पढ़कर भी उस ज़माने में लोग उसी तरह सभ्य , शिक्षित और पंडित हो सकते थे जिस तरह कि हिंदी, बांग्ला, मराठी आदि भाषाएं पढ़कर इस ज़माने में हम हो सकते हैं। फिर प्राकृत बोलना अपढ़ होने का सबूत है, यह बात कैसे मानी जा सकती है ? **<u>VSA - अतिलघूत्तरात्मक: 1 अंक</u>** (क) प्राकृत बोलना अपढ़ होन का सबूत क्यों नहीं है ? **<u>SA - लघूत्तरात्मक : 2 अंक</u>** (क) आजकल की प्राकृत किन भाषाओं को कहा गया है और क्यों ?

	(ख) सही मायने में सभ्य, शिक्षित और पंडित कौन होता है?
प्रश्न 2	**SA - लघूत्तरात्मक : 2 अंक** **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –** (क) बिस्मिल्ला खां के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया ? (ख) लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन ने मानव संस्कृति को अविभाज्य वस्तु क्यों माना ? (ग) 'स्थूल भौतिक कारण ही आविष्कारों का आधार नहीं है' बताइए कैसे ? (घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अनर्थ और पापाचार का कारण किसे माना ? (ड.) मन्नू भंडारी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का उनके व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ा ?
प्रश्न 3	निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी तन-सुगंध शेष रही , बीत गई यामिनी, कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी। भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण- छाया मत छूना होगा दुख दूना। **VSA - अतिलघूत्तरात्मक: 1 अंक** (क) कवि छायाओं के पीछे भागने को क्यों मना करता है? **SA - लघूत्तरात्मक : 2 अंक** (क) सुरंग सुधियाँ जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं ? (ख) कवि के अनुसार दुख कब बढ़ जाता है ?
	अथवा
	बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी ।। पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूंकि पहारू।। इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं।। देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।। **VSA - अतिलघूत्तरात्मक: 1 अंक** (क) 'चहत उड़ावन फूंकि पहारू' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

	<u>**SA - लघूत्तरात्मक : 2 अंक**</u> (क) ‘मुनीसु’ कौन है ? लक्ष्मण उनके प्रति मृदु वाणी क्यों बोल रहे हैं ? (ख) ‘कुम्हड़बतिया’ का उदाहरण क्यों दिया गया है ?
प्रश्न 4	<u>**SA - लघूत्तरात्मक : 2 अंक**</u> **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –** (क) संगतकार किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं ? (ख) मां को बेटी अपनी ‘अंतिम पूंजी’ क्यों लग रही है ? (ग) ‘राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद’ में राम के व्यवहार का कौन सा पक्ष उभर कर आता है ? (घ) संगतकार के स्वर ऊंचा न उठाने को उसकी मनुष्यता क्यों समझा जाना चाहिए ? (ङ.) ‘गिरिजाकुमार माथुर’ की कविता ‘छाया मत छूना मन’ क्या संदेश देती है?
प्रश्न 5	<u>**LA - दीर्घउत्तरात्मक : 5 अंक**</u> ‘साना साना हाथ जोड़ि’ में कहा गया है कि ‘कटाओ’ पर किसी दुकान का न होना वरदान है, ऐसा क्यों ? भारत के अन्य प्राकृतिक स्थानों को वरदान बनाने में युवा नागरिकों की क्या भूमिका हो सकती है ?
	खंड – ‘घ’
प्रश्न 1	<u>**LA II - निबंधात्मक: 10 अंक**</u> किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: (क) मित्रता – ● ‘विपत्ति कसौटी जे कसे ते ही साँचे मीत’ ● सच्ची मित्रता की पहचान ● सच्ची / निस्वार्थ मित्रता का महत्व ● जीवन-दिशा तय करने में निर्णायक (ख) पुस्तकालय – ● प्रवेश, बैठने, अध्ययन के तौर - तरीके ● पुस्तकें छाँटना ● दुनिया में झाँकने की खिड़की ● नियमों का निष्ठा से पालन (ग) व्यायाम - स्वस्थ जीवन का आधार ● शरीर और मन दोनों का स्वास्थ्य अनिवार्य ● व्यायाम, आसन - अनेक प्रकार ● खानपान और रहन - सहन ● स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार और विचार

प्रश्न 2	<u>**LA - दीर्घउत्तरात्मक : 5 अंक**</u> कई जगह सूचनापट्ट पर अशुद्ध हिंदी लिखी मिलती है। इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए प्रसिद्ध दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
प्रश्न 3	<u>**LA - दीर्घउत्तरात्मक : 5 अंक**</u> निम्नलिखित गद्यांश का सार लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए : भारत एक विकासशील देश है। 15 अगस्त, सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भारत ने पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, साहित्यिक इत्यादि अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है। परंतु सरकार द्वारा इन पंचवार्षीय योजनाओं पर लगाई गई पूँजी का पूर्णरूपेण लाभ जन-साधारण तक न पहुँचकर कुछेक खास लोगों की जेबों में रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, जमाखोरी और मिलावट जैसी सामाजिक कुरीतियों द्वारा जा रहा है। दूसरे शब्दों में यह कहें कि समाज में भ्रष्टाचार का प्रसार हो रहा है, तो अतिशयोक्ति न होगी। आज चहुँ ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार रूपी दानव समाज की ओर बढ़ रहा है और इसे खाने को आतुर है। भ्रष्टाचार शब्द भ्रष्ट + आचार शब्दों के योग से बना है। भ्रष्ट का अर्थ है निकृष्ट श्रेणी की विचारधारा और आचार का अर्थ है - आचरण। मनुष्य भ्रष्टाचार के वशीभूत होकर देश के प्रति अपना कर्तव्य भूलकर अनुचित रूप से दिन-रात अंधाधुंध पैसा बटोर रहा है। भ्रष्टाचार रूपी वृक्ष की जड़ें ऊपर की ओर तथा शाखाएँ नीचे की ओर बढ़ती हैं, अर्थात् इसकी जड़े नेताओं में और सरकारी तंत्र में वरिष्ठ अफ़सरों में हैं, जिसकी शाखाएँ नीचे कर्मचारियों की ओर बढ़ती हैं। आज लोभ में अंधा मनुष्य भ्रष्टाचार के वशीभूत लोगों का रक्त चूस रहा है। मनुष्य की श्रेष्ठता को धन से आँका जाता है, उसके कर्म से नहीं। जिस मनुष्य के पास जितना अधिक धन होता है, उतना अधिक उसका मान-सम्मान होता है और इसके विपरीत जिसके पास धन नहीं, वह चाहे कितना भी बुद्धिमान, ईमानदार और कर्मठ क्यों न हो, समाज में उसे कोई नहीं पूछता।